

---

# Shri Raghavendra Karavalambana Stotram

---

## श्रीराघवेन्द्रकरावलम्बनस्तोत्रम्

---

### Document Information

Text title : Shri Raghavendra Karavalambana Stotram

File name : rAghavendrakarAvalambanastotram.itx

Category : deities\_misc, gurudev, stotra

Location : doc\_deities\_misc

Author : Krishna Avadhutapandita Vedavyasacharya

Proofread by : Gopalakrishnan, PSA Easwaran

Description/comments : from Raghavendra Tantram

Latest update : December 18, 2021

Send corrections to : sanskrit@cheerful.com

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

December 18, 2021

*sanskritdocuments.org*

---

श्रीराघवेन्द्रकरावलम्बनस्तोत्रम्



श्रीधराङ्घ्रिसरोरुहे दिश दासतामनुदासतां  
तद्वधूपवनादिकेष्वनुदासतामनुदासताम् ।  
राघवेन्द्र कराश्रयं तव देहि मे वर देहि मां  
राघवेन्द्र कराश्रयं दिश रक्षतां कुरु चाक्षताम् ॥ १ ॥

रामया हृतहृत्त्वहं न लभे सुखं न लभे सुखं  
किं करोमि हताशयश्चरितास्म्यहं मृगतृष्णया । हताशयश्चरिष्णुरहं  
राघवेन्द्र कराश्रयं तव देहि मे वरदैहि मां  
राघवेन्द्र कराश्रयं दिश रक्षतां कुरु चाक्षताम् ॥ २ ॥

घातुकं मम पूर्वकर्म विभाधते प्रविबाधते  
तेन संसृतिसागरे भ्रमतो मम भ्रमतो मम ।  
राघवेन्द्र कराश्रयं तव देहि मे वरदैहि मां  
राघवेन्द्र कराश्रयं दिश रक्षतां कुरु चाक्षताम् ॥ ३ ॥

वेद्मि किञ्चन साधनं न हि सद्गतेर्मम सद्गते  
मार्गमाशु विमुक्तिदं प्रतिदर्शय प्रतिदर्शय ।  
राघवेन्द्र कराश्रयं तव देहि मे वरदैहि मां  
राघवेन्द्र कराश्रयं दिश रक्षतां कुरु चाक्षताम् ॥ ४ ॥

द्रावयाऽशु ममापदं नियतायतामनयाऽगतां  
अन्यथा तव भक्तदुःखहरप्रथा तु भवेद्दृथा ।  
राघवेन्द्र कराश्रयं तव देहि मे वरदैहि मां  
राघवेन्द्र कराश्रयं दिश रक्षतां कुरु चाक्षताम् ॥ ५ ॥

यामि कं त्वदृते पितः शरणं वदाशरणः प्रभो  
पुत्रवत्सलता पितुस्तव नास्ति किं तव नास्ति किम् ।  
राघवेन्द्र कराश्रयं तव देहि मे वरदैहि मां  
राघवेन्द्र कराश्रयं दिश रक्षतां कुरु चाक्षताम् ॥ ६ ॥


मानयस्व सुतस्य मे बहु भाषणं करुणेषणं  
वक्रवागपि बालकस्य मुदं पितुः कुरुते न किम् ।  
राघवेन्द्र कराश्रयं तव देहि मे वरदैहि मां  
राघवेन्द्र कराश्रयं दिश रक्षतां कुरु चाक्षताम् ॥ ७ ॥

कृष्णनामयुतावधूतकृतं तव स्तवमादरात्  
यःपठेदिह तस्य तत्सुखमादिशाभयमादिश ।  
राघवेन्द्र कराश्रयं तव देहि मे वरदैहि मां  
राघवेन्द्र कराश्रयं दिश रक्षतां कुरु चाक्षताम् ॥ ८ ॥


इति श्रीकृष्णावधूतविरचिते श्रीराघवेन्द्रतन्त्रे नवमपटले  
करावलम्बनस्तोत्रं नाम चतुर्थोऽध्यायः सम्पूर्णः ।

Proofread by Gopalakrishnan, PSA Easwaran

---

——  
*Shri Raghavendra Karavalambana Stotram*

pdf was typeset on December 18, 2021

——  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

